कृषि किरण अंक-9, जून 2020: पृष्ठ: 29-33
http://saaer.org.in

पशुओं में होने वाले आकस्मिक रोगों का प्राथमिक उपचार

बलबीर सिंह खद्दा, कनक लता, राज कुमार, एस. खजुरिया और ऐ. के. राय

भा. कृ. अनु. प. - कृषि विज्ञान केन्द्र - पंचमहल (केन्द्रीय शुष्क बागवानी संस्थान)

गोधरा-बडौदा हाईवे, वेजलपुर (गोधरा) - 389340 (गुजरात)

किसी आकस्मिक दुर्घटना अथवा आपात स्थिति में रोगी की सहायता आसपास उपलब्ध साधनों, देशी दवाईयों से करना व चिकित्सक के आने या रोगी को चिकित्सालय पहुंचाने तक उनको संभाल कर रखना ही प्राथमिक चिकित्सा कहलाता हैं। प्राथमिक चिकित्सा मनुष्य को ही नही अपितु पशुओं के लिये भी जरुरी हैं क्योंकि आपातकालीन समस्याएं एवं दुर्घटनाएं पशुओं के साथ भी होती हैं। प्राथमिक चिकित्सा वह पद्धति है जो किसी रोग की विस्तृत चिकित्सा के पूर्व की जाये। इससे पशु स्वस्थ भी हो जाता है तथा बीमारी विकराल रूप धारण नहीं कर पाती। प्राथमिक चिकित्सा का पशु चिकित्सा में बहुत महत्व है। अत: पशु पालकों तथा किसानों को प्राथमिक चिकित्सा पर विशेष ध्यान देना चाहिये। प्राय: दुर्घटनावंश बकरी द्वारा विष खा लेना, अतिसार, कब्ज, अत्यधिक रक्तस्त्राव, हडडी का टूटना व जोड़ो का हट जाना आम बात हैं। ये अवस्थायें कष्टदायक होने के साथ साथ कई बार जानलेवा भी हो जाती हैं। इसी प्रकार की आपात कालीन अवस्थाओं में पशु को तत्काल चिकित्सा की आवश्यकता होती हैं। अत: यह आवश्यक है कि पशु के रोग की पहचान सर्वप्रथम की जायें। पशु की सामान्य गतिविधिओं में जरा भी परिवर्तन नज़र आने पर यह बात मन में अवश्य आनी चाहिये कि ऐसा क्यो हैं? कही गड़बड़ तो नही है? परिवर्तन जो पशु में देखे एवं महसूस किये जा सकतें हैं उसमें पशु का बैचेन होना, खाना पीना छोड़ देना या कम कर देना, दूध में कमी, पेशाब व मल में परिवर्तन, पशु की चाल, स्वभाव एवं आवाज में परिवर्तन, सुस्ती, नथूने का सूख जाना, आदि। सर्वप्रथम जैसे ही यह पता चले कि पशु बीमार हैं तो उसे स्वस्थ पशुओं से दूर कर अलग बांध देना चाहिये। बीमार पशु को हवादार, शांत एवं साफ जगह पर रखना चाहिये। बीमार पशु को प्राथमिक चिकित्सा शीघ्र उपलब्ध होनी चाहिये। पशुओं में होने वाली कुछ प्रमुख बीमारियां व आकस्मिक आपातकालीन अवस्थाएं तथा उनके प्राथमिक उपचार निम्नलिखित हैं।

रक्तस्त्राव

रक्त को रोकने का प्रमुख सिद्धांत है कि कटे हुए स्थान पर दवाब देना ताकि रक्त का बहना रुक जाये। यदि रक्त अधिक निकल रहा हो तो कटे हुए स्थान के 2-3 से.मी. ऊपर व नीचे कस कर बांध देना चाहिये। कई बार कटे हुए स्थान पर बांध पाना संम्भव नहीं होता है ऐसी स्थिति में तह लगाकर मोटा किये हुए साफ कपड़े को फिटकरी के घोल में भिगोकर कटे हुए स्थान पर जोर से दबाकर रखना चाहिये। रक्तस्त्राव वाले स्थान पर बर्फ या ठंडे पानी को भी लगातार डालकर खून का बहना रोका जा सकता हैं। यदि खून की नली कट गयी हो तो चिकित्सक को दिखाना चाहिये।

हडडी का टूटना या फैक्चर होना

कई बार पशु का पैर गड्डे में या ऊंचाई से गिरने के कारण उसकी हड्डी टूट जाती हैं। यह दो प्रकार का होता है। पहली स्थिति में हड्डी टूटने के बाद चमड़ी के अंदर ही रहती है। जबकि दूसरी स्थिती में चमड़ी से बाहर आ जाती हैं। हडडी का टूटकर चमड़ी से बाहर निकल जाना ज्यादा खतरनाक स्थिती होती हैं। टूटी हुई हड्डी को हिलने डुलने से बचाने के लिये उन्हें बांस की खपच्चियों से बांध दिया जाता हैं। बांस की जगह पर दूसरे प्रकार का सामान भी उपयोग में लाया जा सकता हैं जैसे पेड़ की डाली। हड्डी टूटने से पशु को बहुत ज्यादा दर्द होता हैं। टूटी हुई हड्डी यदि चमड़ी से बाहर निकल आई हो तो उसे साफ कपड़े से ढ़क देना चाहिये। इस स्थिति में ये भी आवश्यक है कि पशु हिल डुल न पाये जोकि अति पीड़ा दायक स्थिति होती हैं।

घाव होना या लगना

प्राय: पशुओं के चोट लगने या दुर्घटना ग्रस्त होने पर शरीर पर घाव हो जाते हैं। जब चमड़ी फटी हुई नही होती हैं तो प्राय: चोट लगने पर उस जगह सूजन आ जाती हैं या उस चोट के नीचे खून का जमाव हो जाता हैं। दोनों ही अवस्था में बर्फ या ठंडे पानी से चोट की जगह पर सिकाई करनी चाहिये। जिससे सूजन को कम किया जा सके। चोट पुरानी होने पर गर्म पानी से सिकाई करना लाभदायक होता हैं। खुली हुई चोट यदि साधारण हो तो उसे साबुन से अच्छी प्रकार से साफ कर कोई भी एंटीसेप्टिक क्रीम लगानी चाहिये। यदि खून बह रहा हो तो टिंचर बैंजोइन का प्रयोग करना लाभदायक होता हैं। यदि घाव बड़ा हो तो या मवाद आ रहा हो तो पशु चिकित्सक से उपचार करवाना चाहिये।

जलना व फफोले पड़ना

सबसे पहले जले हुए भाग पर ठंडा पानी डालना चाहिये। ठंडे पानी से जलन कम हो जाती हैं। बाद में जैतून का तेल व नारियल के तेल का लेप लगाना चाहिये। जले हुए भाग पर चूने का पानी एवं अलसी का तेल बराबर भाग में मिलाकर लगाना चाहिये। घावो को रगड़ने से बचाना चाहिये। अविलम्ब पशु चिकित्सक से उपचार करवाना चाहिये।

गले में कुछ अटकना

कई बार पशु बड़े आकार के खाद्य पदार्थ जैसे सेव, आलू, आदि निगल लेते हैं जो आकार में बड़ा होने के कारण यह खाद्य नली को पार नहीं कर पाते और गले में अटक जाते हैं। पशु के मुंह से लार टपकती हैं। पशु बेचैन रहता है व उसका पेट भी फूल जाता है। कभी-कभी पशु पानी नहीं पी पाता व पीया हुआ पानी नाक से बाहर आ जाता हैं। ऐसे पशु के गले पर बाहर हाथ फेर कर पता करना चाहिये कि वस्तु कहां पर है जो रूकावट का कार्य कर रही हैं। जब पता लग जाये तो उसे दबाकर तोड़ने की कोशिश करनी चाहिये। प्राय: ऐसी वस्तु टूट जाती है। टूट जाने पर पशु को मीठा तेल पिलाना चाहिये जिससे वे पेट में चली जाये।

अफरा

पशुओं द्वारा अधिक मात्रा में रिजका, सरसो, बरसीम खा लेने पर या अनाज या बासी खाना खा लेने पर यह अवस्था उत्पन्न हो जाती हैं। इस तरह के खाने से उत्पन्न गैस पेट से बाहर नही निकल पाती व पेट फूलने लगता हैं। इस स्थिति में पशु को पानी बिल्कुल भी नही पिलाना चाहिये। यदि पेट फूलता ही जा रहा हो तो पशु चिकित्सक को बुलाना चाहिये। गैस अधिक मात्रा में होने पर पेट में बांई तरफ उपर की ओर कोख से जहां गैस भरी हो में इंजेक्शन की 16 नम्बर की सूई से गैस निकाल देनी चाहिये या किसी तेज धार वाले चाकू जिसे आग में गर्म करने के बाद ठंडा किया गया हो से छेद कर देना चाहिये ताकि पशु की मृत्यों दम घुटने से न हो। काला नमक 50-60 ग्राम, हींग़ 10 ग्राम, अजवाइन 50 ग्राम पानी मे मिलाकर पिला देवे तुरंत लाभ मिलेगा। तारपीन का तेल 50-100 मि.ली. व अलसी का तेल 200-250 मि.ली. पिलाये। इससे गैस बनना बंद हो जायेगी व आंतों की भी गति बढ़ेगी जिससे खाया हुआ भोजन जल्द बाहर निकल जायेगा।

बेहोश होने पर

विभिन्न परिस्थितियों में पशु अचेत हो सकते हैं जैसे सिर में चोट लगना, पानी में डूबना, धुएं में दम घुटना, विधुत करेंट का झटका लगना, हृदय की धड़कन कम या ज्यादा होना, हृदय गति अवरुद्ध होना आदि। अधिकतर प्रस्थितियों में कृत्रिम श्वसन देना लाभकारी होता हैं। सिर में चोट लगने पर ठंडे पानी की पटिट्यां सिर पर रखते हैं। विधुत करंट लगने पर पैर व छाती की मालिश करना व पशु को गर्म रखना चाहिये। कृत्रिम श्वास देना चाहिये व हृदय की मालिश करना चाहिये। यदि पशु कुछ समय बाद पानी पीने की स्थिती में हो उसे नमक और गुड़ मिलाकर पानी पिलाना अत्यंत लाभदायक होता हैं।

सांप के काटने पर

पशुओं में ज्यादात्तर पैरों में ही सर्प दंश होता हैं। जिस भाग पर सांप ने काटा हो उसके 3 इंच ऊपर पतली डोरी से कसकर बांध देना चाहिये। सांप काटे हुए स्थान में नये ब्लेड से चीरा लगा देना चाहिये ताकि खून के साथ - साथ विष भी बाहर निकल जाये। सांप ने पशु के पैर में काटा हो तो पशु को खड़ी अवस्था में तथा शांत वातावरण में तब तक रखा जाये जब तक कि पशु चिकित्सक वहां पहुचकर सर्प विष की प्रतिरोधी दवा नहीं दे देते। पशु को चाय या कॉफी का पानी पिलाते रहना चाहिये जिससे पशु सो न जाये।

पागल कुत्ते के काटने पर

पागल कुत्ते द्वारा काटने पर लाइफबॉय व कपड़े धोने के साबुन से घावं को कई बार धोना चाहिये और यदि कारबोलिक ऐसिड मिल जाये तो उससे घाव को लगा देना चाहिये। रोगी पशु को अन्य जानवरों व मनुष्यों से दूर रखना चाहिये। अविलम्ब पशु चिकित्सक को दिखाकर रेबिज के टीके लगवाने चाहिये।

जहरीली दवा निगलने पर

जहरीले पौधे, कीटनाशक औषधियां, चूहे मारने की दवा, साइनाइड युक्त चारे इत्यादि खाने से पशु जहरवाद से पीड़ित हो जाती हैं। पशु को गुनगुने पानी में नमक या पिसि हुइ सरसों मिलाकर पिलाते हैं जिससे उल्टी हो जाये तथा अमाशय में भरा जहर निकल जाये। इसके अलावा एक जमाल घोटा या मुठी भर नमक देने से तुरंत दस्त हो जाते हैं जिससे पिया हुआ जहर बाहर निकल जाता हैं। अगर घर में मैग्नीशियम सल्फेट हो तो पशु को 100 ग्राम घोल कर पिलाते हैं। अलसी/ अरंडी का तेल 250-300 ग्राम पिलाते

हैं। तत्पश्चात शीघ्र ही चिकित्सक को बुला कर उपचार करवा लेना चाहिये।

युरिया खाद खाने पर

ग्रामीण क्षेत्रों में पशुओं द्वारा यूरिया खाने की घटनायें अक्सर देखी जाती हैं। पशुओं द्वारा यूरिया खाने पर तुरंत 100-150 ग्राम साइट्रीक अम्ल/ नीम्बू का फूल/ नीम्बू सत्त/ नीम्बू रस पिलावें। ध्यान रखें कि युरिया खाद खाने पर पशु को कभी भी खट्टी छाछ नही पिलानी चाहियें क्योंकि खट्टी छाछ से युरिया का जहर कई गुणा और बढ़ जाता हैं जिसके कारण पशु की तुरंत मृत्यु हो सकती है।

योनिपथ/ बेल निकलना/ कांटा निकलना/ शरीर बाहर निकलना

इसका मुख्य कारण कैल्शियम व फास्फोरस की कमी। अत: गाभिन पशु को 40-50 ग्राम खनिज लवण प्रति दिन ब्याने के 1-2 महीने पूर्व से देते रहना चाहियें जिससे बेल निकलने की संम्भावना कम रहती है। इसमें खड़ीयां भी लाभप्रद हैं। अगर बेल/ कांटा निकल जाती हैं तो इसे डिटॉल या लाल दवा से 1:1000 के अनुपात के घोल से साफ करके तथा पशु के अगले पैर नीचे तथा पिछले पैर ऊचे स्थान पर रख कर साफ हाथ से दबाब लगाकर अंदर कर देनी चाहिये ताकि बेल पर कम दवाब पड़ें। इस क्रिया को करते समय कपड़े या रस्सी की ईडुणी बनाकर मुताली को बाहर से रस्सियों की सहायता से बांध देते हैं। इसमें एक रस्सी पशु के उदर व दूसरी गर्दन के पास बांधकर बनाई गयी ईडुणी को रस्सियों से बांधते हैं। अधिक जानकारी के लिये नजदीकी पशु चिकित्सक से संपर्क स्थापित करना चाहिये।

आंख में कुछ गिरने पर

आंख में कुछ गिरने या कीचड़ इत्यादि होने पर उसे साफ रूई या कपड़े की मदद से हल्के से निकाल देना चाहियें। ताजे पानी से आंखों को धो देना चाहियें। बोरीक ऐसिड पाउडर को पानी मे मिलाकर आंख की धुलाई करें/ आंख में डालें तथा चिमठी भर बोरीक ऐसिड पाउडर को आंख मे डालें।